

प्रातःकिरण



f /Pratahkiran

t /Pratahkiran

/Pratahkiran

हर खबर पर पकड़



12 नाजी सैनिकों के समान पर दूड़ोंने माफी मांगी.....

वर्ष : 11

अंक : 137

पटना, मंगलवार, 27 सितम्बर, 2023

विक्रम संवत् 2080

पेज : 12

मूल्य ₹ : 03.00

www.pratahkiran.com

भारत-आस्ट्रेलिया तीसरे एकदिवसीय मैच में आज आस्ट्रेलिया पर रहेगा दबाव.. 11

हिंद-प्रशांत क्षेत्र की जटिलताएं दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी : राजनाथ

प्रातःकिरण

नई दिल्ली/एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की जटिलताओं से निपटने और क्षेत्र में समृद्धि, सुरक्षा तथा समवेशी भवित्व सुनिश्चित करने के लिए मंगलवार को सामूहिक प्रयास करने का निर्देश दिया। 13 विं दिन-प्रशांत सेना प्रमुख सम्मेलन (आईपीसीसी) में सिंह ने कहा कि राष्ट्रों को यह समझना चाहिए कि वैश्वक मुद्दों में कहि उत्थारक शामिल हैं और कहा भी सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि हिंद-

देश अकेले इस चुनौतियों का समाधान नहीं है, बल्कि एक पूर्ण भू-राजनीतिक रचना है, और वह क्षेत्र सीमा विवादों और समुद्री दर्शन वर्ती वैश्वक चिंताओं के बीच आई है। रक्षा मंत्री ने कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और समृद्धि वसुषुप्त कुटुंबकम् द्विनाया एक परिवार है। एक प्राचीन भारतीय लाकाचार को माध्यम से क्षेत्र के लिए अपने दृष्टिकोण को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ावा देता है। भारतीय सेना द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जब विभिन्न देशों के चिंता के चक्र बायी सकल



शांति अब एक नौववान रचना ही नहीं है, बल्कि एक पूर्ण भू-राजनीतिक रचना है, और वह क्षेत्र सीमा विवादों और समुद्री दर्शन वर्ती वैश्वक चिंताओं का समाधान कर रहा है। रक्षा मंत्री ने अमरिकी लेखक स्टीफेन अर कोवी के एक सैद्धांतिक मॉडल के माध्यम से क्षेत्र के लिए अपने दृष्टिकोण को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ावा देता है। भारतीय सेना द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जब विभिन्न देशों के चिंता के चक्र बायी सकल

समझना चाहिए कि वैश्वक मुद्दों में कई उत्थारक शामिल हैं, और कोई भी देश अकेले इन चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकता। उन्होंने सर्कल ऑफ कर्सन में अमरिकी लेखक ने कहा, इसके फलस्वरूप या तो राष्ट्रों के बीच सर्वांगी हो सकता है या वे पारस्परिक रूप से जुड़ावा देते हैं। अंतरराष्ट्रीय समुद्रों के साथ बातचीत करने और कूटनीति का फैसला ले सकते हैं। इस तरह की अवधारणा रणनीतिक सोच और प्राथमिकता के महत्व को रेखांकित करती है। सिंह ने कहा कि राष्ट्रों को यह 1982 को ऐसे अंतरराष्ट्रीय समझौते का एक अच्छा उदाहरण बताया जो नैवहन गतिविधियों के लिए कानूनी ढांचा स्थापित करता है और विभिन्न देशों के सर्कल ऑफ कर्सन के एक दूसरे पर हाथी होने से उन्हें बाले मुद्दों का समाधान करता है। सिंह के अनुसार, साथ ही वैश्वक मंच पर प्रभाव चढ़ाव यानी बदलाव देने के लिए अपने प्रभाव चढ़ाव यानी बदलाव ऑफ इन्स्ट्रूमेंट्स की पहचान करनी चाहिए और उसका विस्तार करना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने विकास भवन एवं विश्वेश्वरैया भवन में अवस्थित कार्यालयों का किया औचक निरीक्षण

सबलोग समयपर आएं और ठीक ढंग से करें काम : नीतीश

- मंत्रियों के समय पर कार्यालय नहीं पहुंचने पर जराई नाराजगी
- जांच के दौरान कई मंत्री व अधिकारी रहे अनुपस्थित

प्रातःकिरण



चौधरी अपने कार्यालय में उपस्थित नहीं थे लेकिन जब मुख्यमंत्री उनके कक्ष में खड़े थे तो उसी समय भवन निर्माण मंत्री अपने कार्यालय पहुंचे और देर से पहुंचने की सफाई दी। मुख्यमंत्री जब निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे उपस्थित नहीं थे तो मुख्यमंत्री ने शिक्षा मंत्री को फोन लगाया और पूछा कि अभी तक कार्यालय क्षेत्र में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे उपस्थित नहीं थे तो मुख्यमंत्री ने शिक्षा मंत्री को फोन लगाया और पूछा कि अभी तक कार्यालय क्षेत्र में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, शिवाय मंत्री चन्द्रशेखर, गन्धी उद्योग मंत्री आलोक कुमार महेना, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेत, परिवर्तन मंत्री शीला शुभमारी, जयंती कुमार सर्वजीत के कार्यालय पहुंचे और वहाँ वे सभी मंत्री अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित नहीं थे। मद्यनिषेध, उत्तराद एवं निर्बंधन मंत्री सुनील कुमार अपने कार्यालय कक्ष में उपस्थित थे। भवन निर्माण मंत्री अशोक

गोदी, खड़े, राहुल व प्रियंका ने तीन नाजी सैनिकों के इसका विवरण किया।

ये कैसा हार्ड स्टेट?

नरेंद्र मोदी सरकार दुनिया में भारत की छवि हार्ड स्टेट की बनाना चाहत

है। भाजपा का पुराना आरोप है कि अन्य पार्टीयों के शासनकाल में भारत सॉफ्ट स्टेट था। लेकिन चीन की जब बात आती है, तो हार्ड स्टेट का वह नैरेटिव क्यों मद्दम पड़ जाता है? बीते जुलाई में चीन में वृशुच वर्ल्ड कप का आयोजन हुआ था, तब चीन ने अरुणाचल प्रदेश के तीन एथलीटों को स्टेपल्ड वीजा दिया था। यानी उसने अन्य भारतीय नागरिकों को दिया जाना वाला सामान्य वीजा उहे देने से इनकार कर दिया था। तब भारत ने उस पर कड़ा विरोध जताया और वर्ल्ड कप ट्रॉनमेंट में भाग लेने से इनकार कर दिया। चीन जा रहे भारतीय खिलाड़ियों को तबवाई अड्डे से लौटा लिया गया था। यह एक सही प्रतिक्रिया थी। कोई देश यह मंजूर नहीं कर सकता कि उसके किसी क्षेत्र को कोई अन्य देश इस तरह विवादास्पद बनाने की कोशिश की जाए। अब चीन ने वही भारत की प्रतिक्रिया अलग नजर आई है। इस बार भारत की प्रतिक्रिया अलग नजर आई है। जबकि बाकी पूरी टीम को वहां जाने दिया गया। फिर यह खबर आई कि विरोध जताने के मकसद से खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने उद्घाटन समारोह में भाग लेने का अपना कार्यक्रम रद्द कर दिया है मुझ्हा यह है कि जब पूरे ट्रॉनमेंट के बायोकॉट के भारत के फैसले की चींने परवाह नहीं कीं, तो एक मंत्री के ना आने की वह कितनी परवाह करेगा? हालांकि ऐसा फैसला खिलाड़ियों के साथ बड़ा अन्याय होता, लेकिन किसी का कोई नुकसान राष्ट्र को होने वाली क्षति से बड़ा तो नहीं हो सकता। अगर भारत एशियाई खेलों के बहिष्कार का एलान करता, तो उससे चीन की मेजबानी पर जरूर एक धब्बा लगता-साथ ही उससे चीन के इस तरह के रवैये पर दुनिया में चर्चा भी होती। जहां तक खिलाड़ियों के साथ अन्याय की बात है, तो ऐसा जुलाई में वृशुच के बाकी खिलाड़ियों के साथ भी हुआ था। एक जैसी ही घटना पर कोई देश अलग-अलग मौकों पर अलग रुख कैसे अपना सकता है? नेंद्र मोदी सरकार दुनिया में भारत की छवि हार्ड स्टेट की बनाना चाहती है। भाजपा का पुराना आरोप है कि अन्य पार्टीयों के शासनकाल में भारत सॉफ्ट स्टेट था। लेकिन चीन की जब बात आती है, तो हार्ड स्टेट का वह नैरेटिव क्यों मद्दम पड़ जाता है?

डॉ श्रीगोपाल नारसन

वैश्वक शिखर सम्
शर्मा ने भाग लिया।

इस सम्पलन में मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि हमारा देश हजारों वर्षों से आध्यात्मिकता का केंद्र रहा है। भारत में बहुत लोग हैं जो यह मानते हैं कि भारत 15 अगस्त 1947 से शुरू हुआ है और हमारा संविधान ही भारत का मूलभूत है। लेकिन मैं समझता हूँ कि भारत की सनातन सभ्यता और संस्कृति पाच हजार साल पुरानी है जो भारत का मूलभूत गौरव है। हमने जो ज्ञान ऋषि-मुनियों से सीखा है वही ज्ञान हमारे संविधान में समाहित किया है। भारत का संविधान हमारे ही देश की शिक्षा, सभ्यता और संस्कार से प्रेरित है, जो कहता है कि हमें संविधान के आधार पर चलना चाहिए। लेकिन मैं कहता हूँ कि उससे पहले हम भारत की पुरातन शिक्षा के आधार पर चलें तो अच्छा इंसान बन सकते हैं। सदाचार, सच्चाई, सद्घाव, अहिंसा, दया, प्रेम, करुणा, क्षमा और धैर्य हमारे मूल्य हैं। इनके आधार से ही व्यक्ति के चरित्र का निर्धारण किया जाता रहा है। श्रीमद्भगवत् गीता के अनुसार कर्म ही हमारा मूल धर्म होता चाहिए। गीता कहती है कि आप कर्म करो और भगवान् को अर्पण करो। वही जीवन का मार्ग है। इससे ही जीवन सफल होता। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि मानव मात्र निमित्त होता है जो करते हैं भगवान करते हैं। हमारा मूल ज्ञान यही है कि परमात्मा एक हैं और हम सभी आत्माएँ हैं। हमारे गलत कर्म हमें परमात्मा से दूर कर देते हैं। लेकिन जब हम परोपकार, पुण्य कर्म करते हैं तो परमात्मा से पुनः मिल सकते हैं। सेवा से आत्मा निर्मल होती है। निर्मल आत्मा, परमात्मा की सबसे प्रिय और पास होती है। ब्रह्माकुमारीज में हमें आत्मा को परमात्मा से मिलाने का ज्ञान दिया जाता है। वर्ष 1937 में इस संगठन की शुरूआत की गई थी जो आज

जीत की गारंटी नोटी हार का टीकरा किसके सिर!

जारी का नोटरा जनवरी जाने साक्षण काफ़ी पूर्ण हुआ था इसके बाद का अंतर्काल तकलिम तक भारतीय जागरण व प्रवासी जागरण का शिरपराज के मुख्यमंत्री रहते इस बार सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ने का ऐलान पहले ही कर दिया ही। जो जन आशीर्वाद यात्रा का घेहरा बनकर माहील बनाने और समझने मतदाताओं के बीच पहुंचे थे वो गिने-चुने वर्तमानों के बीच मोटी कमीजूटीगी में सिर्फ़ फोटो फ्रेम का दिस्सा बनकर रह गए। भाजपा की नीति के पथरार माने जाने कुशाग्राऊ ट्रकरे यारेलाल खड़ेलवाल का जिक्र कुछ पूर्व मुख्यमंत्री के साथ मोटी ने किया जाए लेकिन सत्ता संगठन के नीति निर्धारकों के अलावा सीएम इन वेटिंग की दौड़ में सामिल नेताओं को भी इस मंध से कोई महत्व नहीं दिया गया। मोटी के उद्घोषन से पहले प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री को जर्जर अपनी बात खड़ने का मौका दिया गया। सवाल क्या इसे भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व खासतौर से मोटी शाह की जोड़ी की रणनीति माना जाए। जो 2024 के लिए मोटी के अनिवार्य स्थीकार्य नेतृत्व में नियावर लाने के लिए एक अलग माहील बना रहे तो क्या 2023 में विधायक से लेकर मंत्री और सरकार और नेतृत्व कर्ता के खिलाफ एंटर इनकमेंसी अभी भी समर्प्या बनी हुई है। जो एक घेहरे पर कई घेहरे लगाते हुए मोटी के गरोसे ही चुनाव जीतना चाहती है



स्वीकार्य नेतृत्व में निखार लाने के लिए पिं

1

नब्ज पर हाथ रख मोदी ने बखूबी मतदाता और नेतृत्व के बीच की अहम और निणायिक कड़ी को खूब साधा। लेकिन उन्होंने जाने अनजाने या चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए सोची समझी रणनीति के तहत मंचासीन नेताओं के महत्व को नजर अंदराज कर पार्टी के अंदर और बाहर एक नई बहस जरूर छेड़ दी। जीत की गारंटी नरेंद्र मोदी लेकिन कोई चूक हुई तो फिर हार का ठीकरा किसके सिर फोड़ा जाएगा। क्योंकि भाजपा ने शिवराज के मुख्यमंत्री रहते इस बार सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ने का ऐलान पहले ही कर दिया ही। जो जन आशीर्वाद यात्रा का चेहरा बनकर माहौल बनाने और समझने मतदाताओं के बीच पहुंचे थे वो गिन-नुचे वक्ताओं के बीच मोदी की मैजूदगी में सिर्फ़ फोटो फ्रेम का हिस्सा बनकर रह गए। भाजपा की नीव के पथर माने जाने कुशभाऊ ठाकरे प्यारेलाल खड़ेलवाल का जिक्र कुछ पूर्व मुख्यमंत्री के साथ मोदी ने किया जरूर लेकिन सता संगठन के नीति निर्धारकों के अलावा सीएम इन वेटिंग की दौड़ में शामिल नेताओं को भी इस मंच से कोई महत्व नहीं दिया गया।

मोदी के उद्घोषण से पहले प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री को जरूर अपनी बात रखने का मौका दिया गया। सवाल क्या इसे भाजपा के गार्ड्रीय नेतृत्व खासतौर से मोदी शाह की जोड़ी की रणनीति माना जाए। जो 2024 के लिए मोदी के अनिवार्य 2023 में विधायक से लेकर मत्री और सरकार और नेतृत्व कर्ता के खिलाफ एंटी इनकमेंसी अभी भी समस्या बनी हुई है। जो एक चेहरे पर कई चेहरे लगाते हुए मोदी के भरोसे ही चुनाव जीताना चाहती है। वह भी तब जब 15 महीने के मुख्यमंत्री कमलनाथ का चेहरा सामने ला चुकी कांग्रेस भाजपा में नेतृत्व पर सवाल खाड़ा कर चुटकी ले रही है। सिर्फ़ मोदी का चेहरा सामने रखकर समस्या और दूसरी चुनौतियों से क्या भाजपा को निजात मिल जायेगी। या फिर क्षेत्रीय और राजनीती फेक्टर पार्टी की परेशानी बढ़ा सकते सवाल क्या कनाटक की लाइन पर ही बीजेपी हाइक कामन सामूहिक नेतृत्व का हवाला देकर मध्य प्रदेश में चुनावी बिसात बिछा रहा है। ऐसे में क्या गारंटी पीढ़ी परिवर्तन के दौर में अनुभवी और युवाओं की महत्वाकांक्षा की टकराहट के चलते मोदी की मेहनत और उनका मिजाज क्य मध्यप्रदेश की जनता को रास आएगा। वह भी तब जब पार्टी में भगदड़ को उसके नीति निर्धारक कोई तवज्ज्ञ नहीं दे रहे। डैमेज कंट्रोल को लेकर खड़े हो रहे सवालों के बीच बड़ा सवाल का सेहरा यदि नरेंद्र मोदी के सिर पर बंधेगा और यदि कोई चूक हुई तो नया सवाल 24 के पहले हार का ठीकरा किसके सिर पर फोड़ा जाएगा। जीत की गारंटी मोदी फिर भी शिवराज को लगातार कमज़ोर और अलग-थलग साबित कर विधायक के उमीदवार क्या चुनाव जीत पाएंगे। या

आशीर्वाद मांगने के लिए उत्तर क पहले ही बड़ा संदेश दे दिया है। पार्टी के लिए स्थानीय मुद्रे क्षेत्रीय जातीय समीकरण क्या कोई मायने नहीं रख सकते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय वे जन्मदिन 25 सितंबर पर भाजपा के कार्यकर्ता महाकुंभ यह पहला नहीं था जो अभी तक चुनाव आचार सहित लगाने से ठीक पहले जन आशीर्वाद यात्रा के समापन का मंच और चुनाव के शंखनाद का साथी बन रहा। 2008 में शिवराज का नेतृत्व और आडवाणी, सुषमा, उमा की मौजूदाई ही वा फिर 2013 का जंबूरी पैदान जापार्टी की कमान राजनाथ के पास थे और चेहरा शिवराज खासतौर से मोटा आए थे। 2018 में भाजपा का ताना बाना मोदी और शाह के इदर्गिर्द बुरुचुका था। वोट ज्यादा फिर भी सरकार बनाने और बनाने के लिए सीटे को पड़ गई थी। इस बार इस मंच से ना तेप्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जन आशीर्वाद यात्रा का कोई जिक्र करना मुनासिर समझा। ना ही मुख्यमंत्री शिवराज और मंचासीन किसी और दूसरे नेतृत्व का नाम लिया गया। गेम चेंजर बनकर चर्चा में आई लाडली बहना योजना जिसे शिवराज सरकार का मिशन 23 का मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा इस उपलब्धि का भी कोई जिक्र नहीं और ना ही संसद से पास हुए महिल आरक्षण बिल पर पिछड़े वर्ग के कोकी मांग कर रही उमा भारती के ट्वीटी

A large, colorful banner featuring several portraits of Indian political leaders, including Prime Minister Narendra Modi, Arun Jaitley, and others. The banner is set against a background of green and red flowers. In front of the banner, a group of people wearing orange vests and white shirts are standing, some holding small flags or banners. The overall scene suggests a political rally or event.

ने से वराज मंत्री जरूर मध्य दल्ली वाले दूरी और यरिंग तरुर गारी, आधी वाली चर्चां हिला ए तो नजर नम्री दृष्टि, ए स के नावी मोदी ने काल ग कर मर्मण कता वह में दैरान नी से फस्ट ताओं कर प्रदेश के साथ देश में भाजपा सरकार की जरूरत और उसके महत्व को रेखांकित किया। बड़ी बेबाकी और साफगोई से आत्मविश्वास का लोहा मनवाते हुए मोदी ने अपनी गरांटी गिनाते हुए मोदी है तो मुश्किन है पर न सिफ़्क। मोहर लगाई बल्कि कांग्रेस की नीति नीत पर सवाल खड़े करते हुए बदलते भारत की तस्वीर को एक ग्लोबल लीडर के साथ सामने रखा। उन्होंने नारी शक्ति के लिए आरक्षण, उनके उत्थान, योगदान को गिना कर आधी आबादी यानी महिलाओं को सावधान किया कि वो विरोधियों की नारी एकता को खिखिड़त करने की साजिश पर सतर्क रह एक जुट बने रहे। बीजेपी और कांग्रेस सरकार की तुलना करते हुए मोदी ने बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस का ठेका अर्बन नवरसिलियों के पास है।

मोदी ने कांग्रेस और उसके नेताओं के साथ इंडिया गठबंधन को भी जम कर कोसा। अपनी सरकार की उपलब्धियाँ और देश में आए बड़े परिवर्तन का झोरा सामने रखते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं को उनकी भूमिका और महत्व की याद दिलाते हुए कहीं ना कहीं लगे हाथ चुनाव का एजडा भी सेट कर दिया। महिला आरक्षण के मुद्दे पर नारी शक्ति की एक जुटाका पाठ पढ़ाते हुए आरक्षण में ओबोसी कोटा की मांग का इशारा इशारों में फिलहाल नकार दिया। मोदी ने कार्यकर्ता महाकुंभ के मंच से अपनी धमक का एहसास कराया स्पाख नहीं कौन क्या उनके बारे में सोचता। इससे शयद कोई फर्क उन्हें नहीं पड़ता। कमल चुनाव चिन्ह। चेहरा कोई भी हो। जीत की गारंटी मोदी यही बदलती बीजेपी की तश्वीर देश के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश से एक बार फिर नजर आई। जब मोदी पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद कर रहे थे वह बात और है कि कांग्रेस और उसके राष्ट्रीय महासचिव रणदीप सिंह सुरजवाला ने मोदी के इस उद्घोषण पर चुटकी ली और शिवाराज सरकार की धेराबंदी कर सवाल खड़े किए। तो उधर भाजपा के अंदर से दूरी बना कर चल रही मुख्यमंत्री उमा भारती ने भी अपने ट्वीट के जरिए प्रधानमंत्री ने देंद मोदी को सम्मान दिया लेकिन महिला आरक्षण पर पिछड़ों की भागीदारी पर अपनी बात पर अड़े रहकर सियासी संदेश दिए। देखना दिलचस्प होगा जन आशीर्वाद यात्रा के दैरान जारी पोस्टर। के जरिए सामूहिक नेतृत्व का संदेश देने वाली बीजेपी अब मध्य प्रदेश के मन में मोदी की लाइन बढ़ाते हुए चुनाव में विरोधी कांग्रेस पर खुद को कैसे भारी साबित करती है। क्योंकि अभी भी चुनावी सिफ़्क विपक्ष से नहीं बल्कि पार्टी के अंदर से मिलने से इनकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि विरासत की राजनीति में नेत्र पुत्रों को भी अपनी पारी का इंतजार है। तो 2018 के नीतीजे यह सोचने को मजबूर करते हैं कि छत्रों और अनुभवी को नजर अंदर ज करना भी पार्टी को चुनाव में महंगा पड़ सकता है।

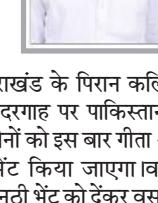
गीता और गंगाजल!

उत्तराखण्ड के पिरान कालयर शराफ में हजरत साबर मखदूम शाह का 755 वा सालाना उस शुरू हो चुका है। हर साल यहां लाखों की तादाद में जायरीन यानि श्रद्धालु देश विदेश से आते हैं जिनमें बांगलादेश पाकिस्तान और साथ अफ्रीका जैसे देशों से आने वाले जायरीन भी शामिल हैं। उत्तराखण्ड वर्फ बोर्ड के अधीक्षण सभा ने इस बारे में एक घोषणा कर दी है कि इस बारे में जायरीनों की संख्या तीव्री से वृद्धि की गई है।

है, इसका संदेश भी हम दे रहे हैं। तभी तो हम उर्स के मौके पर पाकिस्तान से आए तमाम पाकिस्तानियों को गीता और गंगाजल भेट करेंगे, ताकि पाकिस्तानी इस अनूठे उपहार को ले जाकर अपने देश के मंदिरों में दे सकें। इससे उनका अपने देश के मंदिरों के प्रति जु़ड़ा बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि, हम चाहते हैं कि सारी दुनिया एक हो और इसी को लेकर हम लोगों ने यह फैसला लिया है। उत्तराखण्ड में पांचवें धाम के नाम से मशहूर साबिर मखदूम शाह की दरगाह हरिद्वार जिले के पिरान कलियर में मौजूद है।



डॉ श्रीगोपाल नारसन
लेखक आध्यात्मिक चिंतक तथा गिरिजा ग्रन्थालय के निदेशक हैं।



लियर
नान से
आ और
मौके पर पाकिस्तान से आए तमाम
पाकिस्तानियों को गीता और गंगाजल
भेट करेंगे, ताकि पाकिस्तानी इस
भी 110 पाकिस्तानियों को गीता और गंगाजल
कलियर अपने आए हैं वे यह
भी 110 पाकिस्तानियों को गीता और गंगाजल
कलियर अपने आए हैं वे यह

कुटुम्बकम का संदेश दुनिया व
देना चाहता है। उत्तराखण्ड के पिरा
कलियर शरीफ में हजरत साबि
मखबूम शाह का 755 वां सलाम
उसे शुरू हो चुका है। हर साल यह
लाखों की तादाद में जायरीन यात्रा
श्रद्धालु देश विदेश से आते हैं जिन
बांलादेश पाकिस्तान और साउथ
अफ्रीका जैसे देशों से आने वाए
जायरीन भी शामिल हैं। उत्तराखण्ड
वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स
ने बताया कि उन्होंने मोहब्बत व
पैगाम देने की पहल की है। पूर्ण
दुनिया एक परिवार है, इसका संदेश
भी हम दे रहे हैं। तभी तो हम उस वे

अपने देश के मर्दिरों के प्रति जु़ड़ाव बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि, हम चाहते हैं कि सारी दुनिया एक हो और इसी को लेकर हम लोगों ने यह फैसला लिया है उत्तराखण्ड में पांचवें धाम के नाम से मशहूर साविर मख्तूम शाह की दरगाह हरिद्वार जिले के पिरान कलियर में मौजूद है यह दरगाह 755 साल से भी ज्यादा पुरानी है। दरगाह की मान्यता न केवल अपने देश में, भल्कि दुनिया के अन्य कई देशों में भी है। हर साल उस के मौके पर पाकिस्तान से भी सैकड़ों लोग इस दरगाह पर सजदा करने अपनी आस्था के कारण पहुंचते हैं। इस बार पिटाई होती है। इस दरगाह में हर्घम के श्रद्धालु आते हैं यह देश क दूसरी सबसे बड़ी दरगाह है। यह सूफी संत अलाउद्दीन अली अहमद साबिर की कब्र है। मुस्लिम वे साथ-साथ हिंदू धर्म के लोग भी इस दरगाह पर चादर चढ़ाने आते हैं ऐसी मान्यता है कि यहां आवे वाले श्रद्धालुओं की समस्याएं दूर होती हैं और मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। इस दरगाह में नकारात्मक ऊज और भूत-प्रेतों के शाये से छुटकारा मिलता है। जिन लोगों पर भूत बाधा होती है, उनके परिवार वाले उन्हें इस दरगाह में लेकर आते हैं। यह दरगाह

भारत की अद्यक्षता

की कमी की बात की गई है और वर्तमान में चल रहे रूस-यूक्रेन सर्वधर्म के महेंजर

जेमर बड़ी बाबिर था। अपने हां ले लगागर बाबिर बांटा नहीं करीद बना तभी रह रह हैं। जहां पर मेहदी डोरी की रस्स को अदा किया जाता है। इसके बाद सालाना उर्स का विधिवत आगाज होता है। भारत के पिरान कलियर उर्स में शामिल होकर साबिर साहब की दरगाह पर सजदा करने के लिए पाकिस्तान में इस्लामाबाद स्थिथ भारतीय दूतावास में 161 पाकिस्तानी लोगों ने वीजा के लिए आवेदन किया था। जिनमें से भारतीय दूतावास ने 110 पाकिस्तानियों को पिरान कलियर उर्स का वीजा दिया है जिनमें 108 जायरीन और 2 पाकिस्तान धर्मस्व विभाग के अधिकारी शामिल हैं।

के परिणाम

न की न्वर्वन कर सकें। भारत हमेशा से वैश्वक वित्तीय दाचे में सुधारों का पक्षधर रहा है।

गया जायरीनों को जवाइंट मजिस्ट्रेट एवं मेला अधिकारी अभिनव शाह, वरक बोर्ड अध्यक्ष शादाब शम्स, सीईओ सैयद सिराज उसमान, एसपी देहात स्वप्न किशोर सिंह और खुफिया विभाग द्वारा कड़ी सुरक्षा के बीच रुड़की से कलियर ले जाया गया। 110 पाकिस्तानी जायरीनों को दिल्ली स्थिथ पाकिस्तान दूतावास के दो लाइजनिंग अधिकारी शफकत जलबानी और मोहम्मद उस्मान अटारी बॉर्डर से रिसीव करके ट्रेन द्वारा पिरान कलियर तक लेकर आए हैं। जिनकी अपने वतन के लिए वापसी अब 2 अक्टूबर को होगी।

इस विश्वास की कमी को हल करने की आवश्यकता है। हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय देश यह नहीं मान सकते कि जी-२० का रुख नम्र हो गया है और ७५ प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करता था। लेकिन जी-२० में अफ्रीकी संघ के प्रवेश के बाद, अब यह दुनिया की ८२ प्रतिशत आबादी, दुनिया से ही हांगलोबल साउथ के हितों की रक्षा की बात की। इसके मुताबिक, सम्मेलन के अंत में निर्मला सीतरमण ने कहा, ह्याभारत अपनी बात पर खड़ा उत्तर। यानी भारत ने इस संदर्भ में, इस बात पर सहमति हुई कि बहपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) की पूँजी संरचना में बदलाव होना चाहिए। इस शिखर सम्मेलन में एक स्वतंत्र पैनल की

तेकिन हम लिखित में यही देखते हैं। भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन और उसके निष्कर्षों को लेकर न केवल भारत बल्कि अन्य विकासशील देशों में भी काफी उत्सुकता थी। भारत की ओर से इसके लिए न केवल भौतिक तैयारी, बल्कि बौद्धिक तैयारी भी पूरी गंभीरता से की गई थी। अब जब वह सम्मेलन संपन्न हो गया है तो यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि इस सम्मेलन के निष्कर्ष दुनिया के लिए क्या मायने रखते हैं? यह समझना होगा कि यह सम्मेलन कई मायनों में बहुत महत्व रखता है। जी-20 दिल्ली शिखर सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम, समूह में अफ्रीकी सघ की 88 प्रतिशत जीडीपी और लगाव ग्रा प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है। इस बदलाव का महत्वपूर्ण पहल यह है कि अब ग्लोबल साउथ न केवल बहुसंख्यक आबादी का ही प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि सकल धरेल उत्पाद और वैश्विक व्यापार में भी उसका बड़ा हिस्सा है। यह उमीद करना उचित है कि यह बदलाव अब जी-20 के कामकाज और निर्णयों में दिखार्दे देने लगेगा। वैश्विक तनाव और उथल-पुथल के बावजूद, न केवल घोषणा पर अपन सहमति बन सकी, बल्कि जो निष्कर्ष निकले, वे इस सम्मेलन में भारत द्वारा दिए गए ध्येय बाब्य एक पृथ्वी, एक

सिफारिशों के अनुसार, पूँजी पर्याप्तता दाढ़े (सीएफ) के माध्यम से इन एमटीबी में सुधार सनिश्चित करने पर सहमति व्यक्त की गई है। इस शिखर सम्मेलन की दूसरी सभासे महत्वपूर्ण उपलब्धि क्रिएटों को विनियमित करने को लेकर है। भारत ने कराधान के माध्यम से क्रिएटों को विनियमित और नियंत्रित करने के लिए अपने स्वतंत्र प्रयास किए हैं। गौरतलब है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पहले भी इस संबंध में दुनिया से समन्वय और आपसी सहयोग का आहंक किया था। जी-20 शिखर सम्मेलन इस संबंध में वैश्वक सहमति बनाने का एक उपयुक्त अवसर था। दिल्ली घोषणा में कहा गया था कि वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) की उच्च स्तरीय सिफारिशों का समर्थन करते हैं जिनके अलावा घोषणा में विशेष रूप से, सेटल बैंक डिजिटल करेसी (सीबीडीसी), डिजिटल सावंजनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण, डिजिटल इको-सिस्टम को बढ़ावा देने पर अलग-अलग उप-खंड हैं। इन मुद्दों के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत पहले से ही इन मुद्दों पर अपने समक्ष देशों से बहुत आगे है। लंबे समय से विकसित और विकासशील दोनों प्रकार के देशों बहुराष्ट्रीय कंपनियों, खासकर तकनीकी कंपनियों, सोशल मीडिया कंपनियों और ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा कर परिहार (टैक्स)

बिग बॉस 16 फेम सुंभुल तौकीर खान का छलकादर्द

बिग बॉस 16 फेम सुंभुल तौकीर खान जल्द ही टीवी पर काट्या-एक जगत्ता, एक जगत्ता में बॉटैर लीड जगत्ता आयेंगी। सीरियल में वापसी का इंप्रेवेट काट्या के विराट में दिखेंगी। जल्द ही में खास बातपूरी के दौरान, अभिनेत्री ने बताया कि वे अपनी पिता के सपनों को पूरा करने की है कांशिश में लगी है। बातपूरी के दौरान उन्होंने अपने प्रोफेशनल लाइफ से जुड़ी कुछ दिलचस्पी बताई नी साझा की।

रियल लाइफ में किसे अपना आदर्श मानती हैं?

रियल लाइफ में सबसे बड़े आदर्श मेरे पिता हैं। उन्होंने मुझे और मेरी छाटी बहन को अकेले बड़ा किया है। एक पिता के लिए ये बहुत मुश्किल होता है और मुझे लगता है कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। मैंने हमें से यही सोचा कि मेरे पापा ने अपनी जिजिदी में जितने दस्तगाल देखे हैं, जितनी महनत उन्होंने की है, मैं कभी वो कर्ज अदा नहीं कर पातींगी। हाँ, उन्हें थोड़ी खुशी देने की कांशिश जरूर कर सकती हूँ। मैं अपना बर्स्ट देने की कांशिश कर रही हूँ।

पिता आपके करियर से कितने संतुष्ट हैं?

आज मैं अपने पिता को सुखन में देखती हूँ। उन्हें मातृत्व है कि मैं बड़ी हूँ तो अब उन्हें किसी भी बात की चिंता करने की जुरुरत नहीं। उन्हें यकीन है कि मैं जो भी करूँगी, सही

सेंसेक्स
66009.15 पर बंद
निष्टी
19674.30 पर बंद

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran

www.pratahkiran.com

सोना
58,867
चांदी
73,518

भारत 2030 की तय समय सीमा से पहले 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य हासिल कर लेगा: सिंह



नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय बिजली तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री अर्पण सिंह ने सोमवार को कहा कि भारत 2030 की तय समय सीमा से पहले अपने 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य हासिल कर लेगा। फिक्टिकों के 'ईडिया एनजी ट्रान्सिशन समिट 2023' को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि कोविड-19 वैश्विक बहावों की वजह से भारत ने दो वर्ष न गढ़ा होते, तो देश ने अभी तक बिजली उत्पादन क्षमता को 50 प्रतिशत आई गैर-जीवाशम इंडियन आपारित बना दिया होता। मंत्री ने कहा कि भारत में 424 गीगावॉट बिजली उत्पादन क्षमता है जिसमें से 180 गीगावॉट गैर-जीवाशम इंडियन आपारित है। अब 88 गीगावॉट पर काम जारी है। देश ने 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा, "हम 2030 से पहले ही 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा (आई) का लक्ष्य लक्षित कर लेंगे। सिंह ने कहा कि भारत का ऊर्जा बदलाव कार्यक्रम द्वारा इंडिया में अपना है। आई क्षमता वृद्धि दुनिया में सहस्रों तेज है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा संचिच भूपूर्ण रिपोर्ट सिंह भल्ला कहा कि भारत ने पिछले वर्षीय वर्ष (2022-23) में 15 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा जोड़ी, जिसे 2023-24 में 25 गीगावॉट और 2024-25 में 40 गीगावॉट तक बढ़ाया जाएगा।

व्यापार

मुंह के बल गिरे टमाटर के भाव, 200 से लुढ़कर सीधे 5 पर पहुंचा भाव, किसान बेहाल

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय बिजली तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री अर्पण सिंह ने सोमवार को कहा कि भारत 2030 की तय समय सीमा से पहले अपने 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य हासिल कर लेगा। फिक्टिकों के 'ईडिया एनजी ट्रान्सिशन समिट 2023' को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि कोविड-19 वैश्विक बहावों की वजह से भारत ने दो वर्ष न गढ़ा होते, तो देश ने अभी तक बिजली उत्पादन क्षमता को 50 प्रतिशत आई गैर-जीवाशम इंडियन आपारित बना दिया होता। मंत्री ने कहा कि भारत में 424 गैर-जीवाशम इंडियन आपारित है। अब 88 गीगावॉट पर काम जारी है। देश ने 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा, "हम 2030 से पहले ही 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा (आई) का लक्ष्य लक्षित कर लेंगे। सिंह ने कहा कि भारत का ऊर्जा बदलाव कार्यक्रम द्वारा इंडिया में अपना है। आई क्षमता वृद्धि दुनिया में सहस्रों तेज है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा संचिच भूपूर्ण रिपोर्ट सिंह भल्ला कहा कि भारत ने पिछले वर्षीय वर्ष (2022-23) में 15 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा जोड़ी, जिसे 2023-24 में 25 गीगावॉट और 2024-25 में 40 गीगावॉट तक बढ़ाया जाएगा।

इस वर्ज ह से गिरे भाव

टमाटर के भाव गिरने की सबसे बड़ी वजह बंपर पैदावार का होता है। इसकी वजह से कीमतों में कामयाब रहे हैं। उन्होंने कहा कि अपनी नासिक के मुताबिक, इसकी वजह से गिरे भाव बेहाल कर लेने के लिए टमाटर के भाव पर बिक रहा है। किसान अब अपनी फसल को नष्ट करने के लिए मजबूर हो रहे हैं।

चढ़ाव को रोकने के लिए टमाटर और प्याज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) ही एकमात्र रास्ता है। कुछ किसानों ने अपनी नासिक वजह से गिरे भाव में खालीपांच और लालसलागांव की तीन थोक मट्टियों में उत्पादन का आधा भूसूल नहीं कर पाए हैं। एक एकड़ के लिए टमाटर आगे ने किसान को 2 लाख रुपये की पूँजी की जरूरत होती है।



अब इन्हीं हुई कीमत

पुणे के बाजार में कीमतें 5 रुपये प्रति किलो तक गिर गई हैं। वहाँ पिंपलगांव, नासिक और चांदीचा उत्पादन लगभग 2 लाख क्रेट टमाटर की नीलामी की जा रही है। गज बिक विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए अंकड़े के अनुसार, नासिक जिले में टमाटर की आसत रकम लगभग 12,000 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 4,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेती दोजी नेहरे के लिए एक लाख रुपये खर्च किए थे।

रुपये प्रति किलो तक गिर रहा है, जो लगभग

एक महीने पहले 220 रुपये के आसपास था। पिछले कुछ हफ्तों में थोक बाजारों में कीमतों में जुनार और अंबांव तहसीलों के टमाटर की खेती छोड़ी शुरू कर दी। महाराष्ट्र के सबसे बड़े थोक टमाटर बाजार पिंपलगांव एपीएसपी में प्रतिदिन लगभग 2 लाख क्रेट टमाटर की नीलामी की जा रही है। गज बिक विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए अंकड़े के अनुसार, किसान के काटाई के लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में सहजे दिया है या टेक्टर से फसल को नष्ट कर दिया है। जुनार और अंबांव तहसीलों के एक टमाटर खोने ने खिलेवाले में बुर्बुंडी में विरोध प्रशंसन की योजना बनाने के लिए मंचर में भूमिका नियमित लाभ की उम्मीद रखी गई है। बंपर पैदावार के बाद उनकी जगह खुदारा जाना गया।

किसान नष्ट कर रहे टमाटर

सोलापुर जिले के कोठाने गांव के एक नासिक के लिए 23 किलोग्राम की प्रति किलो अमावास्या के अनुसार टमाटर की खेती के खेतों में जाहां गढ़े परी टमाटर की फसल को नष्ट कर दिया जाता है। किसान के काटाई के लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए 8,500 रुपये खर्च करने पड़े और 100 क्रेट्स (प्रत्येक 23 किलोग्राम) की पास के मोड़नियम मट्टी तक लेने जाना पड़ा। इससे वह प्रति केट 20,000 रुपये से अधिक नहीं कमा सकता था। जबकि उत्पादन खोने पर लगभग एक लाख रुपये खर्च किए थे। सोलापुर के खेतों में खेतों द्वारा इसके लिए

